(MIJ) 2015, Vol. No. 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

# हिन्दी साहित्य की आवश्यकता

**Dr. Mrs. Sunila Malik**

*Principal, Mata Jiyo Devi College of Education, Hissar*

सारांश

हिन्दी साहित्य में विविध विधाओं के अन्तर्गत लेखन हो रहा है। हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत गद्य और पद्य दोनों को शामिल किया गया है। हालांकि पद्य का लेखन तो प्राचीन काल से हो रहा है। परन्तु गद्य की अनेक विधाओं का विकास आधुनिक काल में ही हुआ है। इन विद्याओं में कहानी सबसे सशक्त विधा है वैसे तो कहानी का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव इतिहास, क्योंकि कहानी, मानव स्वभाव और प्रकृति का हिस्सा है। धीरे–धीरे कहानी कहने की आदिम कला का विकास होने लगा। वास्तव में कहानी हमारे जीवन से इतनी निकट थी उसका इतना अविभाज्य हिस्सा है कि हर आदमी किसी ने किसी रूप में कहानी सुनता और सुनाता है। प्रत्येक मनुष्य अपने अनुभव बांटने व दूसरों के अनुभवों को जानने की इच्छा रखता है। अतः यह कहा जा सकता है कि हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में कहानी से जुड़ा होता है।

हिन्दी कथाकार कृष्णा सोबती के अनुसार ''कहानी किसी एक की नहीं, वह कहने वालों की है, सुनने वालों की भी। इसकी उसकी, सबकी, सृष्टि समूचे परिवार की। नानी की मुहर इस पर है इस लोक की प्रजा होने के कारण हर किसी की कहानी लिखी और सुनी जा सकती है।''

MIJ

(MIJ) 2015, Vol. No. 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

आधुनिक कहानी का विकास 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही हो गया था। किन्तु उसका समुचित विकास तो प्रेमचन्द युग में ही हुआ। आज हिन्दी में प्रकाशित होने वाली प्रायः सभी पत्र–पत्रिकाओं में कहानियाँ छपती रहती हैं। आधुनिक कहानी मानव के यथार्थ जीवन को अपना विषय बनाती है। आधुनिक कहानी शोध–मूलक, परिवेश केन्द्रित और मानव जीवन के वास्तविक प्राण प्रश्नों से संयुक्त है। गद्य साहित्य की इसी संवेदनात्मक समृद्धि ने हमेशा मुझे अपनी ओर आकर्षित किया है।

प्राथमिक शिक्षा से ही हिन्दी साहित्य पढ़ा जाता है। हिन्दी साहित्य में कविता, निबंधा, नाटक, कहानी आदि विधाएँ आती है। परन्तु कहानी में विशेष रूचि है हिन्दी साहित्य में अनेक कहानीकार हुए है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर स्नातकोत्तर तक की पढ़ाई में मैंने अनेक कहानीकारों की कहानियाँ पढ़ी।

स्नातकोत्तर स्तर के दौरान मुझे शैलेश मटियानी जी की कहानी पढ़ने का सौभाग्य मिला। उस समय मैंने मटियानी जी की
'चील' कहानी पढ़ी। इस कहानी ने मुझे अन्दर तक हिला दिया और मेरे मन में शैलेश जी की और कहानियाँ पढ़ने की इच्छा हुई। उन्हीं दिनों मुझे शैलेश मटियानी जी की 'इक्यावन कहानियाँ' नामक पुस्तक प्राप्त हुई–जिसमें सावित्री, भविष्य, सतजुगिया, प्रेत–मुक्ति, चील आदि इक्यावन कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों को पढ़कर मुझे लगा कि हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द के बाद मटियानी जी ही एक
ऐसे कहानीकार हैं जिनकी कहानियों में मानव जीवन की सच्चाई उजागर होती है मटियानी जी ने तो समाज के उस वर्ग का कहानियों में वर्णन किया है, जिसे लोग दलित और अछूत कहते हैं तथा घृणा

(MIJ) 2015, Vol. No. 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

की दृष्टि से देखते हैं। इस प्रकार साहित्य के अन्तर्गत चल रहे दलित विमर्श को तथा दलितों में उभरती हुए चेतना को बल देने के लिए मेरे मन में मटियानी जी की कहानियों पर शोध करने की इच्छा प्रकट हुई।

दलित रचनाकार अपने परिवेश एवं समाज के गहरे सरोकारों से जुड़ा है। वह अपने निजी दुःख से ज्यादा समाज की पीड़ा को महत्ता देता है। जब वह 'मैं' शब्द का प्रयोग कर रहा होता है तो उसका अर्थ
'हम' ही होता है। सामाजिक चेतना उसके लिए सर्वोपरि है। अपने समाज के दुःख–दर्द उसे ज्यादा पीड़ा देते हैं।

शैलेश मटियानी जी ने कहीं न कहीं दलित पीड़ा को समझा है और अपनी कहानियों में इसे स्वर दिया है। अपनी मिट्टी के प्रति, एक विशेष लगाव होने के कारण मटियानी जी की अधिकांश कहानियों का परिवेश कुमाऊँ प्रवेश है। वह आजीविका के लिए दिल्ली, बम्बई जैसे नगरों में दर–दर की ठोकरें खाते रहे। उनकी कहानियों में एक ओर जहाँ कुमाऊँ प्रदेश का परिवेश मिलता है। दूसरी ओर वहाँ नगरीय जीवन के विभिन्न आयाम मिलते है। उनकी कहानियों में भोगे हुए यथार्थ के कड़वे अनुभव मिलते है। उनकी कहानियों में अपने परिवेश का प्यार झलकता है तो दूसरी ओर समाज द्वारा प्रताड़ित और शोषित ऐसे लोग मिलते है जो नरक के समान जीवन जाने को विवश है। इन पात्रों में भिखमगें, उठाईगीरी, चोर–बदमाश, जेबकतरे, वेश्याएँ आदि पात्रा शामिल है। केवल इतना ही नहीं अपितु उनकी दृष्टि ऐसे पात्रों पर पड़ी जो उच्च मानवीय मूल्यों से युक्त है। यही कारण है कि उनके साहित्य में दलित जाति के समस्त सरोकारों

MIJ

का रेखांकन मिलता है। दलित जीवन पर शोध करने के लिए शैलेश की कहानियाँ पूर्णतया सहयोगी हैं।

साहित्य के द्वारा ही व्यक्ति और समाज का निर्माण किया जाता है। साहित्य आचरण को गढ़ता है, मनोविकारों पर अंकुश लगता है, सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है। साहित्यकार समाज में जीता है, रहता है और अपने परिवेश को खुली आंखों से देखता है, समाज के असंख्य अनुभवों को अनुभव करता है तत्पश्चात् वह अपनी लेखनी के द्वारा अपने अनुभवों को पन्नों पर उतारता है। उस समय उसके व्यक्तिगत अनुभव व्यक्तिगत न हरकर समष्टिगत बन जाते हैं। साहित्य की शक्ति तोप से भी अध्कि होती है। कलम का सिपाही कभी हारता नहीं, उसकी ताकत असीमित होती है। वह सीधे दिल पर प्रहार करता हैं उसकी चोट बाहर
घाव न पहुँचाकर अन्दर प्रभाव डालती है। साहित्यकार समाज के प्रत्येग वर्ग को समान दृष्टि से देखता है। वह प्रत्येक वर्ग की समस्याओं को अपने साहित्य में स्थान देता है। यह बात अलग है कि भोगे हुए
यथार्थ को अच्छी तरह चित्रित किया जाता है। शैलेश मटियानी जी एक
ऐसे ही साहित्यकार है, जिन्होंने अपनी कहानियों में उपन्यासों में जीवन के यथार्थ को तथा आँखों देखे कुल सत्य को उकेरा है।

'शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित जीवन' करने के पश्चात निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मटियानी की कहानियाँ तत्कालीन युग की तस्वीर है, समय का दर्पण और दलित जीवन का जीवन्त दस्तावेज हैं। मटियानी जी की कहानियों में दलित जीवन का यथार्थ चित्र अंकित है।

(MIJ) 2015, Vol. No. 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

## प्रस्तावित विषय की आवश्यकता

जब कभी शोध के लिए किसी विषय का चुनाव किया जाता है, उसकी कोई न कोई आवश्यकता अवश्य होती है। मटियानी जी ने अपने लेखक कार्य से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। उन्होंने कहानी लेखन के अतिरिक्त दर्जनों उपन्यासों की भी रचना की। मानव जीवन के साथ कहानी का सम्बन्ध वर्तमान नहीं है अपितु यह सम्बन्ध अत्यंत पुराना रहा है। एक सफल साहित्यकार समाज से जुड़ा हुआ होता है। वह समाज में रहने वाले प्रत्येक वर्ग की भावनाओं से जुड़ा होता है। हिन्दी कहानी में अनेकों बदलाव आए हैं। आज कहानी का स्वर दलित जीवन, दलित चेतना या मानव जीवन के यथार्थ से है। दलित जीवन एवं दलित चेतना को जानने, परखने, उनकी पीड़ा आदि को अनुभव करने तथा उनमें उभरती हुई चेतना का मूल्यांकन करने के लिए शैलेश मटियानी की कहानियों को आधार बनाया गया है।

दलित रचनाकार अपने परिवेश एवं समाज के गहरे सरोकारों से जुड़ा है। वह अपने निजी दुःख से ज्यादा समाज की पीड़ा को महत्ता देता है। जब वह 'मैं' शब्द का प्रयोग कर रहा होता है तो उसका अर्थ 'हम' ही होता है। सामाजिक चेतना उसके लिए सर्वोपरि है। अपने समाज के दुःख–दर्द उसे ज्यादा पीड़ा देते हैं।[1]

MIJ

(MIJ) 2015, Vol. No. 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

शैलेश मटियानी जी ने कहीं न कहीं दलित पीड़ा को समझा है और अपनी कहानियों में इसे स्वर दिया है। अपनी मिट्टी के प्रति, एक विशेष लगाव होने के कारण मटियानी जी की अधिकांश कहानियों का परिवेश कुमाऊँ प्रवेश है। वह आजीविका के लिए दिल्ली, बम्बई जैसे नगरों में दर–दर की ठोकरें खाते रहे। उनकी कहानियों में एक ओर जहाँ कुमाऊँ प्रदेश का परिवेश मिलता है। दूसरी ओर वहाँ नगरीय जीवन के विभिन्न आयाम मिलते है। उनकी कहानियों में भोगे हुए यथार्थ के कड़वे अनुभव मिलते है। उनकी कहानियों में अपने परिवेश का प्यार झलकता है तो दूसरी ओर समाज द्वारा प्रताड़ित और शोषित ऐसे लोग मिलते है जो नरक के समान जीवन जाने को विवश है। इन पात्रों में भिखमगें, उठाईगीरी, चोर–बदमाश, जेबकतरे, वेश्याएँ आदि पात्र शामिल है। केवल इतना ही नहीं अपितु उकी दृष्टि ऐसे पात्रों पर पड़ी जो उच्च मानवीय मूल्यों से युक्त है। यही कारण है कि उनके साहित्य में दलित जाति के समस्त सरोकारों का रेखांकन मिलता है। दलित जीवन पर शोध करने के लिए शैलेश की कहानियाँ पूर्णतया सहयोगी हैं।

प्रस्तुत शोध विषय में दलितों के जीवन में आने वाले सभी पड़ावों का वर्णन करना अनिवार्य हैं। मटियानी का समस्त साहित्य लेखन बहुत व्यापक एवं विस्तृत हैं। उनके दलितों से सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य पर शोध करना असंभव तो नहीं था, लेकिन उसमें प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों का अभाव रह जाता। इसी कारण यहाँ विषय से सम्बन्धित कहानियों का ही चुनाव किया गया

MIJ

(MIJ) 2015, Vol. No. 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

है। दलित जीवन की पीड़ा को अनुभव करने के लिए, दलित चेतना को जानने, परखने तथा उनमें उभरती हुई चेतना का मूल्यांकन करने के लिए ही प्रस्तुत विषय–शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित जीवन' विषय का चुनाव किया गया है। यही प्रस्तावित विषय की आवश्यकता है।

शैलेश मटियानी की कहानियों पर शोध करने के कुछ अहम कारण भी हैं क्योंकि मटियानी की कहानियों में दलितों के सम्पूर्ण जीवन का चित्रण हुआ है। जिसके अन्तर्गत जहाँ एक ओर फुटपाथ, झुग्गी–झोपड़ियों, पाईपों में रहने वाले लोगों का जीवन वर्णित है। वहीं उनकी कहानियों में दलित जातियों की समस्याओं का वर्णन भी मिलता है। मटियानी जी की कहानियों को मध्यनजर रखते हुए ये कहा जा सकता है कि भोगे हुए

यथार्थ की प्रामाणिकता अधिक होती है। समीक्षक मैनेजर पांडेय का यह कथन इस प्रमाण की पुष्टि करता है कि 'राख ही जानती है जलने का दर्द, दलित होन की पीड़ा सिर्फ दलित जानता है।'[2]

अतः इन सब बिन्दुओं को दृष्टि में रखकर ही प्रस्तुत विषय

'शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित जीवन' विषय का चुनाव किया गया है। इसलिए विषय से सम्बन्धित तथ्यों व बिंदुओं की खोज की इच्छा से ही प्रस्तावित विषय की आवश्यकता अनुभव हुई।

## प्रस्तावित विषय की महत्ता

(MIJ) 2015, Vol. No. 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

साहित्यकार समाज का प्रेरक, निर्धारक एवं भाग्य नियन्ता माना जाता है। दूसरी ओर साहित्यकार समाज की चित्तवृत्ति के अनुरूप ही साहित्य का निर्माण करता है। समाज की चित्तवृत्ति जनता की चित्तवृत्ति के अनुसार बदलती है। जब भी कोई साहित्यकार अपनी मानस–अनुभूतियों से प्रेरित एवं सामाजिक यातनाओं से पीड़ित होकर साहित्य सृजन करता है तो उसमें समकालीन परिवेश एवं समसामयिकता के सभी गुण देशकाल वातावरण, परिस्थितियाँ जीवन मूल्य आदि स्वयंमेव उपस्थित होते हैं। आधुनिक कहानी आम आदमी की कहानी है। अतः आधुनिक कहानीकार अपनी कहानियों में बदलते परिवेश टूटते हुए पारिवारिक सम्बन्ध, प्रेम के कटु–मधुर सम्बन्ध, भोगे हुए यथार्थ आदि को अपनी कहानियों के विषय बनाते हैं। जैसे–जैसे समाज में परिवर्तन दिखाई पड़ता है वैसे ही साहित्य का स्वरूप उसके पात्र, चरित्र लेखक के विचार, विषय एवं शैली भी परिवर्तित होते जाते हैं।

प्रस्तुत विषय 'शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित जीवन है। इस विषय की महत्ता की अभिव्यक्त करने से पहले हमें संक्षिप्त में दलित का अर्थ जान लेना चाहिए। दलित शब्द का अर्थ है–कुचला हुआ, जिसका दलन और दमन हुआ है दबाया गया है, उत्पीड़ित शोषित, सताया हुआ, घृणित, रौंदा हुआ आदि। डॉ० श्यौराज सिंह बेचैन दलित शारद की व्याख्या करे हुए कहते हैं 'दलित वह है जिसे भारतीय संविधान ने अनुसूचित जाति का दर्जा दिया है।[3] इस प्रकार दलित जीवन का सीधा सहज और संक्षिप्त अर्थ है–दलितों का जीवन।

(MIJ) 2015, Vol. No. 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

प्रस्तुत शोध विषय की महत्ता यह है कि आज एक ओर तो हमारा वर्चस्वशाली समाज है दूसरी ओर दलित। इन दोनों के आपसी सवाल। इन सवालों के बीच पिसती मानव अस्मिता। इन सबकी दशा एवं दिशा को स्पष्ट किए बिना उत्तम समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। आज आवश्यकता है जिन जातियों का वजूद वर्चस्वशाली समाज के कारण धीरे–धीरे लुप्त हो रहा है पुनः उसे स्थापित किया जाए तथा इन दलित जातियों की ओर भी ध्यान दिया जाए।

सुप्रसिद्ध दलित कवि, लेखक ओम प्रकाश बाल्मीकि लिखते हैं–''हिन्दी साहित्य में ढूँढने पर भी अपना चेहरा दिखाई नहीं देता[4] इस प्रकार के कथन को पढ़कर एक कचोटने वाला सवाल उस साहत्य और समाज को कठघरे में लाकर खड़ा कर देता है जो अपने स्थापित होने की डींगे हाँकता हो। जब दलित सा रचनाकर साहित्य में दलित जीवन की समस्याओं उनकी पीड़ा की अभिव्यक्ति को देख नहीं पाता है तो यही पीड़ा ऐसे गंभीर विषय पर सोचने को विवश करती है।

आज दलित साहित्य चर्चा के केन्द्र में है। वैसे तो दलित साहित्य के अनेक विद्वान दलित साहित्य का इतिहास बहुत पुराना मानते हैं। गत वर्षों में दलित साहित्य आन्दोलन से हिन्दी प्रक्रिया का जो रूप उभरा है, वह एक उम्मीद जगाता है।[5] दलितों में चेतना जागृत करना ही दलित साहित्यकारों का उद्देश्य है। इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अनेक साहित्यकारों ने दलित साहित्य लिखा है।

MIJ

(MIJ) 2015, Vol. No. 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

शैलेश मटियानी जी ने दलित साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। शैलेश मटियानी के अनेक कहानी संग्रह हैं जिनमें कुमाऊँ अंचल के जीवन यथार्थ को मानवीय संवेदना के स्तर पर चित्रित किया गया है।उन्होंने गरीबी का जीवन जिया है।उन्होंने स्वयं अपनी आँखों से दलित, असहाय, पीड़ित, निर्धन, निम्न लोगों के जीवन को देखा है।परिणामतः उनकी अधिकांश कहानियों में दलित चेतना का जिस प्रकार का वातावरण चित्रण किया है, उस वातावरण में उन्होंने जीवनयापन भी किया है।

मटियानी जी ने सतजुगिया आदमी, चील, मिट्टी आदि कहानियों में दलितों की जीवन पद्धति को पूर्ण रूप से स्पष्ट किया है। इन कहानियों का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते है कि मटियानी जी ने दलित जाति में चेतना जागृत करने का भरसक प्रयास किया है। इस प्रकार के अध्ययन द्वारा ही निम्न वर्ग के लोगों को सचेत किया जा सकता है।

## प्रस्तावित विषय का उद्देश्य

प्रायः कहा जाता है कि कोई भी कार्य उद्देश्यविहीन नहीं होता। स्वाभाविक है कि जब प्रत्येक कार्य उद्देश्य पूर्ण होता है। तब यह शोध उद्देश्यविहिन कैसे हो सकता है। शैलेश मटियानी हिन्दी कथा साहित्य जगत में विलक्षण प्रतिभा रखने वाले कथाकार हैं इनकी कहानियों पर शोध करना, जहाँ

(MIJ) 2015, Vol. No. 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

कहानीकार की कहानियों में वर्णित दलित जातियों की रूप रेखा, जीवन पद्वति, समस्याएँ, उनमें उभरी हुए चेतना की खोज करना, वही हिन्दी पाठक के समक्ष एक नया दलित ग्रंथ प्रस्तुत करना है, जिससे कि मेरा उद्देश्य सार्थक हो सके।

प्रस्तुत विषय 'शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित जीवन पर शोध कार्य करने के लिए दलित जीवन के आयाम और जीवन की समस्याओं के रूप में कुछ आधार निश्चित किए गए है।

मटियानी की कहानियेां में दलित जीवन का अध्ययन करते समय पाया कि लेखक ने दलित जीवन से सम्बन्धित सभी कहानियों में अस्पृश्य जातियों पर थोपी गई धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक अयोग्यताएँ तथा दलित जीवन की सभी प्रकार की समस्याओं आदि सदर्भों का पूर्णतया समावेश किया है। दलित जाति के प्रत्येक पक्ष को परखने के लिए जिन आधारों को शीर्षक बनाया गया है, उनका विवरण इस प्रकार है–

MIJ

## संदर्भ

1- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, ओम प्रकाश वाल्मीकि, पृ० 40

2- वही, पृ० 44

3- डॉ० श्यौराज सिंह बेचैन–युद्धरत आम आदमी, पृ० 14 4. कल के लिए, त्रैमासिक पत्रिका

5- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ० 18

6- अमर उजाला अंक 1 सितम्बर 2009

7- अमर उजाला अंक 8 सितम्बर 2009

8- मार्क्स और पिछड़े हुए समाज, डॉ० रामविलास शर्मा, पृ० 235

9- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ० 65

10- साहित्यिक, सुभाषित कोश, हरिवंशराय शर्मा, पृ० 60

11- डॉ० सी. बी. भारती, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ० 70–72

MIJ